मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

परवल की लाभदायक खेती

अंकित कुमार गोयल[1], राजमणि सिंह[2], डा.अमित कनौजिया[3]

[1]छात्र, [2]शोध छात्र, उद्यान विज्ञान विभाग, बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश), [3]कृषि वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केंद्र, जालौन (उत्तर प्रदेश)

परिचयः—परवल एक महत्वपूर्ण कददूवर्गीय फसल है। परवल की खेती पूरी दुनिया भर में की जाती है। भारत में इसकी खेती मुख्यतःपश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, असम, मध्य प्रदेश, और राजस्थान आदि राज्यों में की जाती है। परवल बहुत ही पोष्टिक एवं औषधीय गुणों से भरपूर सब्जी है इसमें 2 प्रतिशत प्रोटीन, 0.3 प्रतिशत फैट, 2.2 प्रतिशत काब्रोहाइड्रेट, 153 आईयू विटामिन–ए, और 29 मिलीग्राम विटामिन–सी, प्रति 100 ग्राम खाये जाने वाले भाग्य में पाया जाता है। यह आसानी से पचने वाली भीतल, पित्तनाशक, हृदय एवं मतिष्क को शक्तिशाली बनाने वाली एवं मूत्र सम्बंधी रोगों को ठीक करने में काफी लाभप्रद है। परवल के अपरिपक्व फलों का उपयोग सब्जी के रूप में किया जाता है तथा इसके परिपक्व फलों का उपयोग अचार एवं मिठाई के रूप में किया जाता है।

जलवायुः—परवल गर्म जलवायु की फसल है। इसके सफल उत्पादन के लिए गर्म एवं आर्द्र जलवायु अच्छी मानी जाती है। परवल को 25–35 डिग्री सेल्सियस तापमान तक सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। इसकी खेती के लिए कम तापमान तथा अधिक आर्द्रता उपयुक्त नहीं होती है।

भूमि और भूमि की तैयारीः—परवल की खेती के लिए रेतीली दोमट से दोमट भूमि सबसे अच्छी मानी जाती है जिनमें जल निकास अच्छा हो और कार्बनिक पदार्थ उचित मात्रा में उपलब्ध हो। भूमि का पी.एच. मान 5.8–7.5 के बीच होना चाहिए। खेत को एक बार मिट्टी पलटने वाले हल से जोतना चाहिए, इसके बाद दो से तीन बार हैरो या देशी हल से जुताई करके पाटा लगाकर खेत को समतल बना लेना चाहिए। जिससे सिंचाई तथा जल निकास का उचित प्रबंधन हो सके।

प्रजातिः—काशी अलंकार, स्वर्ण अलौकिक, स्वर्ण रेखा, काशी सुफल, कल्याणी, छोटा हिली, सानकोलिया, दामोदर, दादली, फैजाबाद परवल –1, फैजाबाद परवल –3, राजेन्द्र परवल –1, बिहार शरीफ आदि।

पौध तैयार करनाः—परवल का प्रर्वधन कटिंग के द्वारा किया जाता है, जिसे शल्क कहा जाता है। कटिंग की लम्बाई 1 से 1.5 मीटर उचित मानी जाती है। परवल की पौध तैयार करते वक्त हमेशा ध्यान रखे की चिन्हित किये हुए मादा पौधे से ही पौध तैयार करें। इसके लिए पौधों का चुनाव खेत में खड़ी फसल को देखकर ही कर लेना चाहिए। नर्सरी में इसकी पौध पॉलीथीन में लगाकर तैयार करना सबसे अच्छा होता है, जिसमें कटिंग को जैविक खाद मिली मिटटी में लगा देते है, और लगभग 25 से 30 दिन में पौध मुख्य खेत में लगाने के लिए तैयार हो जाती है।

पौध रोपणः—परवल की पौध को मेड़ और समतल भूमि दोनों जगहों पर लगाया जाता है। समतल भूमि में थाला बनाकर पौध को लगाया जाता है। एक थाले से दूसरे थाले के बीच की दूरी 4 से 5 मीटर रखनी चाहिए। मेड़ पर पौध से पौध की दूरी लगभग 1 से 1.5 मीटर रखनी चाहिए और एक मेड़ से दूसरी मेड़ की दूरी लगभग 2 से 2.5 मीटर रखनी चाहिए। पौध रोपण करने के तुरंत बाद हल्की सिंचाई जरूर करनी चाहिए।

पौध रोपण का समयः—परवल की पौध रोपण का उचित समय जुलाई से सितम्बर तक होता है।

पौधों को सहारा देनाः— परवल की पौध को बड़े होने पर सहारा देने की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसके पौधे बेल की तरह फैलते है। सहारा देने के लिये हम बॉस की सहायता से एक T आकार की संरचना बनाते है, और फिर बेल को उसके ऊपर चढ़ा देते है।

सिंचाईः— सिंचाई भूमि में नमी की कमी को देखते हुये करनी चाहिए। सामान्यतः गर्मियों के दिनों में 4 से 6 दिन के अंतराल पर तथा सर्दियों में 10 से 15 दिन के अंतर पर सिंचाई करनी चाहिए।

खाद एवं उर्वरकः— खेत की तैयारी के समय 25–30 टन गोबर की अच्छी सड़ी हुई खाद को प्रति हैक्टेयर की दर से अच्छी तरह से खेत में मिला देना चाहिए। परवल का अच्छा उत्पाादन प्राप्त करने के लिए 70–80

किलोग्राम नाइट्रोजन, 50–60 किलोग्राम फॉस्फोरस एवं 80 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता पड़ती है। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा सिंगल सुपर फॉस्फेट और म्यूरेट ऑफ पोटाश की पूरी मात्रा को खेत की अंतिम जुताई के समय उपयोग करना चाहिए। नाइट्रोजन की शेष मात्रा को दो बराबर भागों में बॉटकर प्रथम मात्रा पौध रोपणे के 30 दिन बाद और शेष बची हुयी मात्रा को फूल आने पर उपयोग करना चाहिए।

खरपववार नियंत्रणः–परवल की फसल में खरपतवार नियंत्रण करने के लिए समय–समय पर निराई गुड़ाई करनी चाहिए। पहली गुड़ाई पौध लगाने से लगभग 25–30 दिन बाद करनी चाहिए, और फिर बाद में लगभग 20–25 दिन के अंतराल पर निराई गुड़ाई करके खरपतवार नियंत्रण करना चाहिए। अगर खरपतवार की अधिक समस्या हो तो 1.2 लीटर पेन्डामेथिलीन के घोल का प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

रोग एवं रोकथामः–

- **चूर्णिल आसिताः**–यह रोग फफूँदी जनित होता है। इस रोग में पौधों के तनों पर तथा पुरानी पत्तियों के निचले भाग में गोल सफेद धब्बे दिखाई देते हैं, बाद में ये धब्बे बढ़कर पत्ती की पूरी सतह पर छा जाते हैं जिससे पत्तियों की सतह पर एक सफेद सा पाउडर दिखाई देता है।

  रोकथामः–रोग के लक्षण दिखाई देने पर घुलनशील गंधक के चूर्ण का 0.5 प्रतिशत का घोल बनाकर 2 से 3 बार छिड़काव करना चाहिए।
- **डाउनी मिल्डयूः**– यह रोग भी फफूँदी जनित होता है इस रोग के लगने पर पौधों की पत्तियों पर पीले रंग के धब्बे दिखाई देने लगते हैं, और बाद में ये धब्बे पूरी पत्तियों पर फैल जाते है। जिससे पत्तियॉ सूखने लगती है।

  रोकथामः– इसकी रोकथाम के लिए मैंकोजेब या इंडोफिल एम.– 45 नामक दवा का घोल बनाकर पौधों पर छिड़काव करना चाहिए।

कीट एवं रोकथाम :–

- **फल मक्खीः**–यह कीट परवल के फलों के लिए काफी हानिकारक है। मादा मक्खी फलों में अण्डे देती है जिसके कारण फलों में सड़न पैदा होती हैं, और बाद में फल सड़ने लगते है।

  रोकथामः–इस कीट की रोकथाम के लिए इंडोसल्फान या मेलाथियान नामक दवा को 0.05 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
- **रेड पम्पकिन बीटलः**–ये लाल रंग के कीट होते हैं, जो पौधों के उगते ही फसल को खाना भ्रारू कर देते है। जिससे पौधे बाद में सूखने लगते है।

  रोकथामः– इस कीट की रोकथाम के लिए सेविन 10 प्रतिशत धूल का 15–20 किलोग्राम बुरकाव प्रति हैक्टेयर की दर से करना चाहिए अथवा सेविन 50 प्रतिशत घुलनशील धूल के 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए।

फलों की तुड़ाईः–परवल के फलों की तुड़ाई हाथो की सहायता से की जाती है। परवल के पौधों पर मार्च के महीने से फल लगना शुरू हो जाते हैं, जो लगभग 10 से 14 दिन में तोड़ने लायक हो जाते है। नाजुक फलों को समय रहते तोड़ लेना चाहिए, नही ंतो बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलता है। फलों की तुड़ाई हमेशा सुबह के समय करनी चाहिए, जिससे फल बाजार में ज्यादा समय तक ताजे दिखाई देते रहे।

उपजः–परवल के एक हैक्टेयर क्षेत्र से लगभग 180 से 200 क्विंटल उत्पादन प्राप्त होता है।